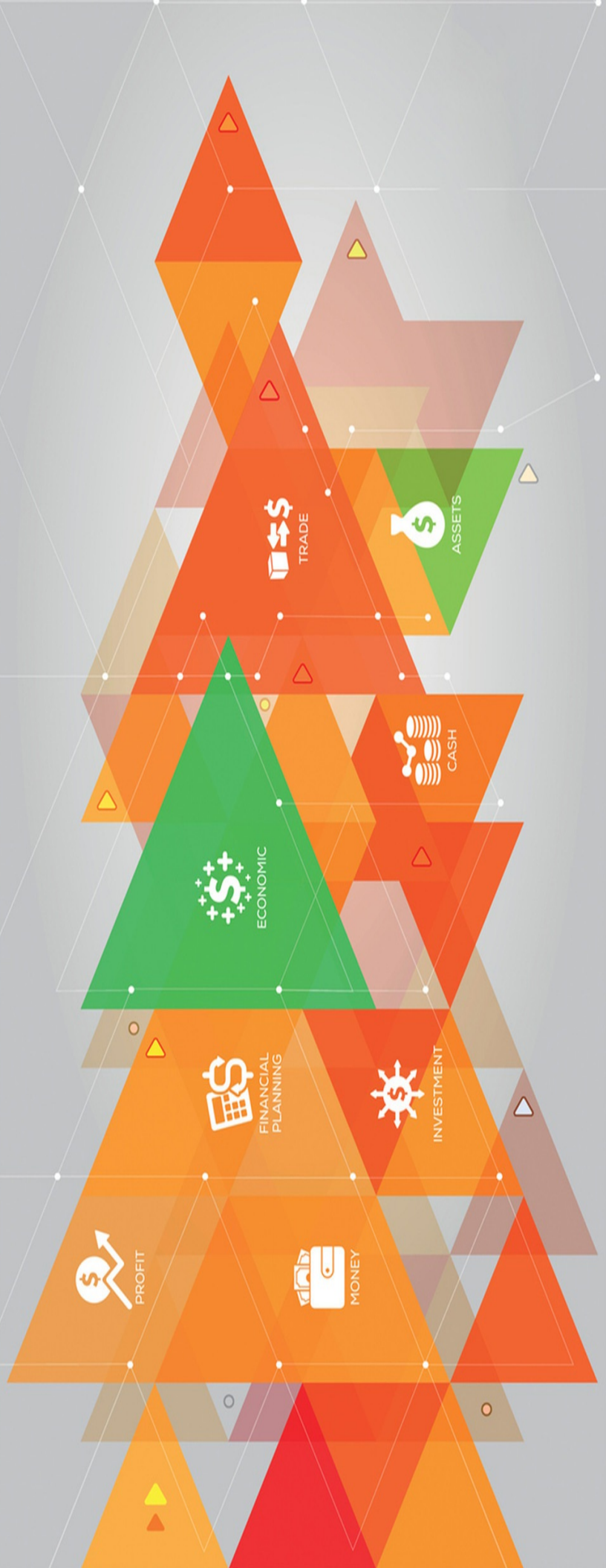


# म्यूचुअल फंड

से पैसे कैसे कमाएं



म्यूच्यूअल फंड से पैसे कैसे कमाएं

**Author : Topcolor Prints.**

# Table of Contents

## Contents

### भाग: 1

#### 1. परिचय

1. म्यूचुअल फंड क्या है?
2. म्यूचुअल फंड्स की संरचना
3. एसेट मैनेजमेंट कंपनियां
4. म्यूचुअल फंड्स किस प्रकार के होते हैं?

### भाग - 2

1. म्यूचुअल फंड योजनाएं
  2. म्यूचुअल फंड ढांचा (फ्रेमवर्क)
  3. म्यूचुअल फंड चयन प्रक्रिया
- विविधता
4. वित्तीय योजना और म्यूचुअल फंड

### भाग 3

#### 1. म्यूचुअल फंड्स के फायदे और नुकसान क्या होते हैं

1. म्यूचुअल फंड के फायदे
2. म्यूचुअल फंड से होने वाले नुकसान

### भाग 4

#### 1. म्यूचुअल फंड में निवेश के फायदे

1. सरलता
2. पहुंच
3. विविधीकरण
4. प्रकार: म्यूचुअल फंड कई अलग
5. सामर्थ्य (अफोर्डेबिलिटी):
6. कम खर्च
7. पेशेवर मैनेजमेंट
8. लचीलापन

### भाग: 5

#### 1. म्यूचुअल फंड की सीमा

: पोर्टफोलियो अनुकूलन का अभाव

# भाग: 1

## 1. परिचय

म्यूच्यूल फंड व्यवसायिक रूप से प्रबंधित की जाने वाली निवेश राशि है जो सुरक्षाओं को खरीदने के लिए कई निवेशकों से पैसे इकट्ठे करता है। यह निवेशक प्राकृतिक रूप में रिटेल या संस्था-संबंधी हो सकते हैं।

व्यक्तिगत सुरक्षाओं में सीधे निवेश करने की तुलना में म्यूच्यूल फंड में फ़ायदे और नुकसान दोनों ही हैं। म्यूच्यूल फंड के शुरुआती फ़ायदों में वे स्तरीय अर्थव्यवस्था, उच्च स्तर की विविधता, और नकद राशि प्रदान करते हैं, और वे पेशेवर निवेशकों द्वारा प्रबंधित किए जाते हैं। इसमें नुकसान के तौर पर, म्यूच्यूल फंड में निवेशकों को कई तरह के शुल्क और खर्चों का भुगतान करना होगा।

म्यूच्यूल फंड्स की शुरुआती संरचनाओं में ओपन-एंड फंड्स, यूनिट निवेश ट्रस्ट्स, और क्लोज्ड-एंड फंड्स शामिल हैं। एक्सचेंज-ट्रेडेड फंड्स (ईटीएफ़) वह ओपन-एंड फंड्स या यूनिट निवेश ट्रस्ट्स होते हैं जो विनिमय (एक्सचेंज) पर व्यापार करते हैं। कुछ क्लोज्ड-एंड फंड्स भी एक्सचेंज ट्रेडेड फंड्स की तरह होते हैं क्योंकि उनकी लिक्विडिटी को सुधारने के लिए उन्हें स्टॉक एक्सचेंज पर ट्रेड किया जाता है। म्यूच्यूल फंड्स को मनी मार्केट फंड्स, बॉन्ड या फिक्स्ड इनकम फंड्स, स्टॉक या इक्विटी फंड्स, हाइब्रिड फंड या अन्य प्रमुख निवेशों के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। फंड्स को इंडेक्स (सूचकांक) फंड के रूप में भी वर्गीकृत किया जा सकता है, जो निष्क्रिय रूप से प्रबंधित होने वाला फंड है जो इंडेक्स (सूचकांक) के कार्यों से मेल खाता है। हेज फंड्स म्यूच्यूल फंड नहीं हैं; हेज फंड को साधारण लोगों को नहीं बेचा जा सकता है क्योंकि उसके लिए बहुत बड़े निवेश की ज़रूरत होती है। इनमें म्यूच्यूल फंड से भी ज़्यादा जोखिम होता है और यह अलग-अलग सरकारी नियमों के अधीन होते हैं।

### 1. म्यूच्यूल फंड क्या है?

सबसे पहला आधुनिक निवेश फंड (आज के म्यूच्यूल फंड के पूर्वज) डच गणराज्य में स्थापित हुआ था। एम्स्टर्डम में रहने वाले व्यापारी अब्राहम (या एड्रियन) वैन कटविच ने 1772-1773 में हुए आर्थिक संकट के जवाब में, एंड्रेट माक्ट माग्ट (“एकता में शक्ति होती है”) नाम का एक ट्रस्ट बनाया। जिसका लक्ष्य छोटे निवेशकों को विविधता (डिवर्सिफ़ाई)<sup>[1][2]</sup> के अवसर प्रदान करना था। संयुक्त राज्य अमेरिका में म्यूच्यूल फंड की शुरुआत 1890 के दशक में हुई थी। शुरु में अमरीकी फंड्स आमतौर पर निश्चित संख्या के कुछ शेयरों के साथ क्लोज्ड-एंड फंड्स होते थे जो अक्सर कुल संपत्ति मूल्य के पोर्टफ़ोलियो से ज़्यादा कीमतों पर ट्रेड किए जाते थे। मार्च 21, 1924 को प्रतिदेय (जिसको कैश करवाया जा सके) शेयरों के साथ पहला ओपन-एंड म्यूच्यूल फंड मासेचुसेट्स इन्वेस्टर्स ट्रस्ट के रूप में स्थापित किया गया था (यह आज भी मौजूद है और एमएफएस इन्वेस्टमेंट मैनेजमेंट के द्वारा प्रबंधित किया जाता है)।

1920 के दशक में, संयुक्त राज्य अमरीका में क्लोज्ड एंड फंड्स ओपन एंड फंड्स की तुलना में लगातार ज़्यादा लोकप्रिय बने रहे। 1929 में, उद्योग की 27 अरब की कुल संपत्तियों के केवल 5% ओपन-एंड फंड्स की गणना हुई थी।

1929 में हुए वॉल स्ट्रीट क्रैश के बाद, संयुक्त राष्ट्र कांग्रेस ने खासतौर पर म्यूच्यूल फंड्स और सामान्य तौर पर सुरक्षा बाजारों को नियंत्रित करने वाले अधिनियमों की श्रृंखला को पास किया।

- 1933 के सुरक्षा अधिनियम (सेक्योरिटीज़ एक्ट ऑफ़ 1933) में सभी निवेशकों को सार्वजनिक रूप से बेचने की ज़रूरत होती है, जिसमें म्यूच्यूल फंड्स भी शामिल है, एसईसी के साथ पंजीकरण करने के बाद वे संभावित निवेशकों के साथ एक विवरण पुस्तिका प्रदान करते हैं जिसे निवेश के बारे में ज़रूरी बातों को पता चलता है।
- 1934 के सुरक्षा और विनिमय अधिनियम (द सेक्योरिटीज़ एंड एक्सचेंज एक्ट ऑफ़ 1934) के तहत सुरक्षा देने वाले, जिसमें म्यूच्यूल फंड्स भी शामिल है, नियमित रूप से अपने निवेशक को रिपोर्ट देते हैं। यह अधिनियम सुरक्षा और विनिमय आयोग का भी गठन करता है, जो कि म्यूच्यूल फंड का प्रधान नियामक (रेगुलेटर) होता है।

- 1936 के राजस्व अधिनियम (द रेवेन्यू एक्ट ऑफ़ 1936) ने म्यूचुअल फंड के कर-निर्धारण (टैक्सेशन) के लिए दिशा-निर्देश तैयार किए थे।
- 1940 के इन्वेस्टमेंट कंपनी एक्ट (द इन्वेस्टमेंट कम्पनी एक्ट ऑफ़ 1940) ने खासतौर पर म्यूचुअल फंड पर कानूनी अधिकार रखने वाले नियम स्थापित किए।

इन नए अधिनियमों ने ओपन-एंड म्यूचुअल फंड्स के विकास को (बिल्कुल क्लोज्ड-एंड फंड्स के विपरीत) प्रोत्साहन दिया।

स्टॉक मार्केट में भरोसा लौटने के बाद, 1950 के दशक तक अमेरिकी म्यूचुअल फंड इंडस्ट्री का विकास सीमित बना रहा। 1970 तक, वहां 48 करोड़ की संपत्तियों के साथ लगभग 360 फंड्स थे। 1970 के दशक के आखिर में मनी मार्केट फंड्स में उच्च ब्याज दर की परिस्थिति की शुरुआत ने इंडस्ट्री के विकास को बहुत ही आकस्मिक रूप से बढ़ावा दिया।

1976 में वैनगार्ड ग्रुप के द्वारा, जॉन बोगले की अध्यक्षता में, पहला रिटेल इंडेक्स फंड, पहला इंडेक्स इन्वेस्टमेंट ट्रस्ट, गठित किया गया था, जिसे अब "वैनगार्ड 500 इंडेक्स फंड" के नाम से जाना जाता है और यह दुनिया के सबसे बड़े म्यूचुअल फंड्स में से एक है। 1980 और 1990 के दशकों में फंड इंडस्ट्री का विकास निरंतर जारी रहा।

## 2. म्यूचुअल फंड्स की संरचना

फंड प्रायोजक (फंड स्पॉन्सर) भारत में म्यूचुअल फंड्स की त्रिस्तरीय संरचना का पहला स्तर फंड के प्रायोजक होते हैं। एसईबीआई अधिनियम कहते हैं कि फंड के प्रायोजक ऐसा कोई भी व्यक्ति या कोई भी संस्था होती है जो फंड मैनेजमेंट के द्वारा पैसा कमाने के लिए म्यूचुअल फंड को कायम रख सकता है। यह फंड मैनेजमेंट एक सहयोगी कंपनी के द्वारा किया जाता है जो फंड के निवेश का प्रबंध करती है। एक प्रायोजक को सहयोगी कंपनी के मददगार के रूप में देखा जा सकता है। एक प्रायोजक को म्यूचुअल फंड स्थापित करने की अनुमति लेने के लिए एसईबीआई से संपर्क करना पड़ता है। एक बार जब एसईबीआई इसे शुरू करने के लिए मान जाता है, तो फिर भारतीय अधिनियम 1882 के तहत एक सार्वजनिक ट्रस्ट गठित किया जाता है, जो एसईबीआई के साथ पंजीकृत (रजिस्टर्ड) होता है। ट्रस्ट का प्रबंध करने के लिए ट्रस्टीज़ नियुक्त किए जाते हैं और कंपनीज़ एक्ट, 1956 का पालन करते हुए एक ऐसेट मैनेजमेंट कंपनी बनाई गई है। फंड के प्रायोजकों के लिए कुछ योग्यता मापदंड (एलीजीबिलिटी क्राइटीरिया) हैं: एक प्रायोजक को आर्थिक सेवाओं में कम से कम 5 साल का अनुभव होना चाहिए जिसमें उसके सभी 5 सालों की कुल कीमत सकारात्मक हो। पिछले साल में प्रायोजक की कुल कीमत एएमसी के पूंजी योगदान (कैपिटल कॉन्ट्रिब्यूशन) से बहुत ज़्यादा होनी चाहिए। प्रायोजक को 5 में से कम से कम 3 साल में मुनाफ़ा होना चाहिए जिसमें पिछला साल भी शामिल है। प्रायोजक के पास ऐसेट मैनेजमेंट कंपनी की कुल कीमत में कम से कम 40% शेयर होना चाहिए। ऐसी कोई भी संस्था जो ऊपर बताए गए मानदंडों के लिए उपयुक्त हो उसे म्यूचुअल फंड का प्रायोजक माना जा सकता है। ट्रस्ट और ट्रस्टीज़ भारत में म्यूचुअल फंड की संरचना का दूसरा स्तर ट्रस्ट और ट्रस्टीज़ हैं। ट्रस्टी के पक्ष में, ट्रस्ट डीड नाम के दस्तावेज के द्वारा, फंड प्रायोजक द्वारा एक ट्रस्ट बनाया गया है। ट्रस्ट संभालने का काम ट्रस्टीज़ करते हैं और वे निवेशकों के प्रति जवाबदेय होते हैं। उन्हें फंड और संपत्तियों संरक्षक के रूप में समझा जा सकता है। ट्रस्टीज़ दो तरह से बनाए जा सकते हैं - एक ट्रस्टी कंपनी या बोर्ड आफ ट्रस्टीज़। ट्रस्टीज़ म्यूचुअल फंड के गतिविधियों का निरीक्षण करने के साथ-साथ इसके द्वारा पालन किए जा रहे एसईबीआई (म्यूचुअल फंड) नियमों की जांच करते हैं। वे ऐसेट मैनेजमेंट कंपनी के सभी व्यवहारिक काम, प्रक्रियाएं, और प्रणालियों का भी निरीक्षण करते हैं। एएमसी बाजार में, ट्रस्टीज़ की स्वीकृति के बिना कोई भी योजना जारी नहीं कर सकता है। एएमसी की गतिविधियों के बारे में ट्रस्टीज़ को हर 6 महीनों में एसईबीआई को रिपोर्ट करना होता है....

## 3. ऐसेट मैनेजमेंट कंपनियां

ऐसेट मैनेजमेंट कंपनियां म्यूचुअल फंड्स की संरचना में तीसरा स्तर होती हैं। ऐसेट मैनेजमेंट कंपनी ट्रस्ट के लिए फंड मैनेजर (मैनेजर) या एक निवेश मैनेजर के रूप में काम करती है। फंड का प्रबंध करने के लिए एएमसी को एक छोटा सा शुल्क (फ़ीस) दिया जाता है। एएमसी सभी फंड संबंधित गतिविधियों के लिए ज़िम्मेदार होती है। यह विभिन्न योजनाएं बनाकर उन्हें लॉन्च करता है। एएमसी फंड का प्रबंध करने और निवेशक को सेवाएं प्रदान

करने के लिए बाध्य हैं। यह सेवाओं के अन्य आधारों की मांग करता है और उनके साथ काम करता है, जैसे ब्रोकर, ऑडिटर्स, बैंकर्स, रजिस्ट्रार्स, वकील इत्यादि। यह सुनिश्चित करने के लिए एएमसियों के बीच कोई विवाद ना हो, कंपनियों की व्यावसायिक गतिविधियों पर कुछ प्रतिबंध लगाए गए हैं....

<https://www.fincash.com/l/structure-mutual-funds> पर इसके बारे में और पढ़ें।

## 4. म्यूचुअल फंड्स किस प्रकार के होते हैं?

### i. म्यूचुअल फंड्स के प्रकार

म्यूचुअल फंड्स अपने पोर्टफोलियो में बताई गई जिस प्रकार की सुरक्षाओं और जिस प्रकार के रिटर्न का प्रतिनिधित्व करते हैं, उसके आधार पर उन्हें कई प्रकार की श्रेणियों में बांटा जाता है।

### ii. इक्विटी फंड

म्यूचुअल फंड में सबसे बड़ी श्रेणी इक्विटी या स्टॉक फंड्स की होती है। जैसे कि नाम से ही पता चलता है, इस तरह के फंड को ज्यादातर शेयरों में निवेश किया जाता है। इन श्रेणियों के अंदर भी बहुत सारी उप श्रेणियां हैं। कुछ इक्विटी फंड उन कंपनियों के आकारों के नाम पर भी होते हैं जिनमें वे छोटी, बड़ी या बहुत बड़ी राशि का निवेश करते हैं। अन्यो को उनके निवेश के दृष्टिकोण के आधार पर नाम दिया गया है: जैसे आक्रामक विकास, आमदनी उन्मुख (इनकम-ओरीएन्टेड), मूल्य इत्यादि। इक्विटी फंड्स को उनके घरेलू (यू.एस) स्टॉक या विदेशी इक्विटीज़ में निवेश करने के आधार पर भी वर्गीकृत किया जाता है।

### iii. निश्चित-आमदनी फंड्स (फिक्स्ड-इनकम फंड्स)

दूसरा बड़ा समूह फिक्स्ड-इनकम फंड की श्रेणी है। एक्सएक्स इनकम म्यूचुअल फंड ऐसे निवेशकों पर ध्यान केंद्रित करता है जो रिटर्न की एक निर्धारित दर का भुगतान करते हैं, जैसे कि सरकारी बॉन्ड्स, कॉर्पोरेट बॉन्ड्स, या अन्य ऋण लेने के साधन। इसकी योजना है कि इस फंड का पोर्टफोलियो आमदनी का ब्याज देता (जेनरेट) है, जो बाद में शेयरहोल्डर्स के पास चला जाता है।

### iv. इंडेक्स फंड्स

अन्य समूह, जो पिछले कुछ वर्षों में बहुत ज्यादा लोकप्रिय हो गया है, मोनीकर “इंडेक्स फंड्स” के अंतर्गत आता है। उनकी निवेश की कार्यनीति बहुत ही मुश्किल विश्वास पर आधारित होती है, जो अक्सर बहुत महंगी पड़ती है, और लगातार बाजार को मात देने की कोशिश में लगी रहती है। इसलिए, इंडेक्स फंड मैनेजर उन शेयरों को खरीदता है जो एसएंडपी 500 या डॉव जोन्स इंडस्ट्रियल एवरेज (डीजेआईए) जैसे प्रमुख बाजार सूचकांक के साथ मेल खाते हैं। इस कार्यनीति के लिए विश्लेषकों और सलाहकारों की तरफ से कम रिसर्च की ज़रूरत होती है, इस वजह से शेयरहोल्डर्स के पास जाने से पहले रिटर्न्स को खर्च करने वाले खर्चे कम ही होते हैं। ऐसे फंड्स को अक्सर कॉस्ट-सेंसेटिव निवेशकों को ध्यान में रखकर डिज़ाइन किया जाता है।

### v. संतुलित फंड्स (बैलेंस्ड फंड्स)

संतुलित फंड्स एक संपत्ति वर्ग से दूसरे संपत्ति वर्ग तक पहुंचने वाले जोखिम को कम करने के लिए शेयर्स (स्टॉक्स) और बॉन्ड्स दोनों में ही निवेश करता है। इस तरह के म्यूचुअल फंड का दूसरा नाम “ऐसेट अलोकेशन फंड” है। एक निवेशक बिना कुछ बदले संपत्तियों के वर्गों के बीच इन फंड्स के अलोकेशन (आवंटन) को टूटने की उम्मीद कर सकता है, हालांकि यह फंड्स के बीच थोड़ा अलग होगा। इस फंड का लक्ष्य कम जोखिम के साथ संपत्ति की समीक्षा करना है। हालांकि, यह फंड्स उतने ही जोखिम भरे होते हैं और दूसरे फंड्स के श्रेणी विभाजनों की तरह ही इसमें भी उतार-चढ़ाव की समस्या हो सकती है।

यहां निवेशक या निवेश करने के लिए लगभग हर तरह के फंड्स उपलब्ध हैं। अन्य सामान्य प्रकार के म्यूचुअल फंड्स में मनी मार्केट फंड्स, सैक्टर फंड्स, वैकल्पिक (ऑल्टरनेटिव) फंड्स, स्मार्ट-बेटा फंड्स, टारगेट-डेटा फंड्स,